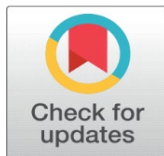


THEORY OF GARDNER 'ARTISTIC SYMBOL': AN ANALYTICAL STUDY

गार्डनर की विचारधारा 'कलात्मक प्रतीक': एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Pratibha Singh 

¹ Assistant professor (Fine Arts), Modern College of Professional Studies, Ghaziabad, India



Corresponding Author

Pratibha Singh,
pratibharajput2722@gmail.com

DOI

[10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.1489](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.1489)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

English: This research paper study art as in form of symbols and do analytical study the theory of Harvard Gardner 'artistic symbols' presented in child art and symbols used in different artist's paintings. In modern art there are many theories on art appreciation and Gardner theory of artistic symbol is one of them. Gardner developed his theory on the basis of American philosopher Nelson Goodman's theory of symbols. In 1973-1980 Gardner experiment about the stages of child brain development and study about children's creative expression and used symbols by them. Also study the symbols used by different artists in their paintings.

Hindi: प्रस्तुत शोध सारांश कला का प्रतीक रूप में अध्ययन करता है तथा हार्वर्ड गार्डनर नामक विद्वान द्वारा प्रस्तुत बालको की कला में प्रयुक्त प्रतीक तथा विभिन्न कलाकारों द्वारा उनकी कलाकृतियों में प्रयुक्त प्रतीको के प्रयोग पर अध्ययन करता है। आधुनिक काल में कला समीक्षा की विभिन्न विचारधाराएँ मिलती हैं। इसी प्रकार संज्ञानात्मक आधार पर कला समीक्षा की विचारधाराओं में से एक है 'कला का प्रतीक रूप में अध्ययन'। गार्डनर ने अमेरिकी दार्शनिक नेल्सन गुडमैन की प्रतीको की विचारधारा के आधार पर अपना मत विकसित किया। 1973-1980 तक उन्होंने बाल मस्तिष्क के विकास की स्थितियाँ, बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं उनमें प्रयुक्त कला प्रतीको का अध्ययन किया तथा साथ ही विभिन्न कलाकृतियों में निहित कलात्मक प्रतीको का अध्ययन करके अपनी विचारधारा प्रस्तुत की।

Keywords: Artistic Symbols, Art Appreciation, Creative Expression, Cognitive Base, कलात्मक प्रतीक, कला समीक्षा, सृजनात्मक अभिव्यक्ति सत्रांनात्मक आधार

1. प्रस्तावना

मानव मस्तिष्क की एक जटिल अभिव्यक्ति है 'कला' और कला के स्वरूप को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तरीकों से जानने की चेष्टा की है। इसी प्रकार संज्ञानात्मक आधार पर कला समीक्षा की विभिन्न विचारधाराएँ मिलती हैं उनमें से एक है 'कला का प्रतीक रूप में अध्ययन'। हार्वर्ड गार्डनर नामक विद्वान ने अमेरिकन दार्शनिक नेल्सन गुडमैन की प्रतीको की विचारधारा के आधार पर अपना मत विकसित किया। 1973-80 तक उन्होंने अनेक अध्ययन किये और उन अध्ययनों में बच्चों के चित्रों में प्रस्तुत होने वाले बाल मस्तिष्क के विकास की स्थितियों को स्पष्ट किया। Funch (1997) इनका मानना था कि बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ उनके क्रियाकलापों और विकास को प्रस्तुत करती हैं। बच्चों की सुन्दर कला रूपों के प्रति संवेदनशीलता उनके स्वयं सृजनात्मक

अभिव्यक्ति में स्पष्ट दिखाई देती है। उसी प्रकार किसी कलाकृति के कलात्मक प्रतीको की बात करते हुए गार्डनर कहते हैं कि प्रतीक वह तत्व होते हैं “जिनमें किसी भी वस्तु के गुणों को बाह्य जगत में प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। एक कलाकृति एक प्रतीक के रूप में काम करती हुई किसी व्यक्ति को प्रस्तुत कर सकती है, किसी बुराई या प्रशंसा को भी प्रकट कर सकती है। उनका मानना है कि कला में प्रयुक्त सभी प्रतीक चित्रित वस्तु के कम से कम दो पक्ष प्रस्तुत करते हैं, एक तो वस्तुओं को धोतक करना दूसरा उसमें निहित आशय या संकेतार्थ को प्रदर्शित करना। Gardner (2011)

बाल मस्तिष्क के विकास की स्थितियाँ एवं उनके प्रतीक

बच्चे अपनी शैशव अवस्था से ही रेखांकन व चित्रण के द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करने में सक्षम होते हैं। Sharma (2008, 172) गार्डनर का मानना है कि बच्चा एक या दो वर्ष की आयु में पहली बार प्रतीको को बनाना प्रारंभ कर देता है। उसकी आरंभिक अवस्था कीरमकाटी की होती है जो Pre-symbolic अवस्था होती है और उसके Pre-symbolic से symbolic अवस्था में पहुँचने को उनके भौतिक जगत के चित्र बनाने में देखा जा सकता है। 2-4 वर्ष की आयु में बच्चा वस्तु या रेखांकन के बीच के अंतर का बोध करने लगता है। धीरे-धीरे ये प्रतीक अधिक स्पष्ट होने लगते हैं और अपने सांस्कृतिक परिवेश के अधिक अनुकूल होने लगते हैं। बच्चों में धीरे-धीरे आत्मबल के साथ-साथ रूप, लय, संतुलन का विकास भी होता रहता है। गार्डनर का मानना है कि सात वर्ष की आयु तक बच्चे किसी कलाकार के समान artistic creativity प्राप्त कर लेता है। सात वर्ष की आयु के बाद बालक की विभिन्न कौशलों का परिष्कृत विकास होता है साथ ही सांस्कृतिक परम्पराओं और नियमों की जानकारी बढ़ती जाती है। Funch (1997)

गार्डनर ने बच्चों के कलात्मक विकास को मानव विकास से जोड़ा है। जैसा कि जीन पियाजे की मानव के शारीरिक विकास की विचारधारा। गार्डनर ने जीन पियाजे की शारीरिक विकास की विचारधारा से कला के स्वरूप को समझने की चेष्टा की है। गार्डनर का मानना रहा कि वृत्तिवाचक मापक जैसे विश्वास, करुणा, प्रेम आदि वृत्तियों को जिन्हें बच्चा अपनी युवावस्था में महसूस करता है उन्हें ही अपनी कला में प्रतीक रूप में दिखाता है। Gardner (1982)

कलात्मक प्रतीको के आधार पर कलाकृति की समीक्षा

किसी भी कलाकृति की सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिक्रिया समझने के लिए गार्डनर लिखते हैं कि इसका प्रमुख उद्देश्य 'symbolic communication' को प्रदर्शित करना है जिससे वह आनन्द, स्वतन्त्रता, संतुलनता, नवीनीकरण आदि को अनुभव कर सके। कलाकृति की पृष्ठभूमि की जानकारी प्रतीको के प्रति सर्वेदनशीलता, अर्थग्रहणशीलता व परिवर्तनशील शैली की जानकारी आदि के द्वारा उसकी भावनाओं को गति मिलती है। जैसे कलाकार पिकासो का चित्र 'Les Femmes d'Alger' by Pablo Picasso' गार्डनर के अनुसार यह चित्र अनेक वेश्याओं को प्रस्तुत करता है और साथ ही साथ यह चित्र कठोरता, दुख, अपकर्ष आदि को भी प्रस्तुत करता है। Funch (1997) इस चित्र में अंकित आकारों को स्त्री या वेश्या के रूप में पहचान करना प्रतीकात्मक क्षमता के कारण ही संभव है जो किसी भी प्रकार की सौन्दर्यानुभूति नहीं कराते। दूसरी ओर चित्र में निहित संकेतार्थ पूरी तरह से कला के तत्वों को प्रदर्शित करते हैं।



चित्र 1 <https://www.artchive.com/artwork/les-femmes-d-alger-pablo-picasso-1907/>
पाब्लो पिकासो द्वारा निर्मित कृति 'Les Femmes d'Alger' by Pablo Picasso'

गार्डनर की विचारधारा का यह प्रमुख पक्ष रहा कि उसने संज्ञानात्मक पक्ष की अपेक्षा भावात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया और भावात्मक पक्ष को ही महत्वपूर्ण माना। गार्डनर की विचारधारा की संज्ञानात्मक आधारशिला उस समय की अन्य विचारधाराओं के समकक्ष थी। जैसे बैरलाइन, गोम्बरिच तथा विट्स आदि। गार्डनर के साथ-साथ इन सभी का मानना था कि कलाकृति एक सूचना के समान है, अर्थात् कोई भी चित्र स्वयं में पहले सूचना देने का कार्य करता है और दर्शक को उस चित्र के द्वारा दी जा रही सूचना समझने में समर्थ होना चाहिए, जिससे वह उसकी प्रशंसा कर सके अर्थात् किसी भी चित्र को पढ़ सकने का कौशल किसी भी चित्र को देखने से प्राप्त होने वाले आनन्द की पूर्व अवस्था है। संज्ञानात्मक विचारधारा में ज्ञान के आधार पर चित्र का आनन्द लिया जा सकता है। गार्डनर ने कलाकृति द्वारा दी जाने वाली सूचना को महत्वपूर्ण माना है। वे इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं कि दृश्यीय कला अपनी दृश्यीय प्रस्तुती रखती है अर्थात् उनका मानना रहा कि चित्र सूचना देने के अतिरिक्त मूर्त आकारों में भी अपना महत्व रखता है। उदाहरण के लिए हुसैन की कृति 'मदर टेरेसा'। हुसैन ने इस कृति के द्वारा उनकी माँ के लिए उनके भावों को अभिव्यक्त किया है। हुसैन ने अपनी माँ को नहीं देखा न ही स्पर्श कभी अनुभव किया। इसीलिए उन्होंने इस चित्र में मदर टेरेसा का चेहरा नहीं बनाया है। इस प्रकार हुसैन ने अपने मन की अभिव्यक्ति एक प्रतीक रूप में प्रस्तुत की है। Hussain (2002)



चित्र 2 <https://artiana.com/Maqbool-Fida-Husain/go5d1>

हुसैन द्वारा निर्मित कृति 'मदर टेरेसा'

2. निष्कर्ष

गार्डनर की विचारधारा अधिक वैविध्ययुक्त विचारधारा है। वे यह मानते हैं कि व्यक्ति का सौन्दर्यात्मक कौशल मानसिक विकास की सामान्य विचारधारा पर आधारित होता है और यह कौशल मनुष्य के उम्र के साथ होने वाले विकास क्रम से जुड़ा होता है। यह सौन्दर्यात्मक कौशल दर्शक को कलाकृति का आनन्द लेने में सहायता करता है। गार्डनर का मानना है कि दर्शक को चित्र के विषयवस्तु से आगे जाकर चित्र की अभिव्यक्ति, क्षमता, भौतिक लय का आनन्द लेना चाहिए। उसका यह भी मानना है कि कला दर्शक को कला इतिहास की प्रमुख परम्पराओं से परिचित होना चाहिए और कुछ समीक्षात्मक निर्णय की क्षमता भी होनी चाहिए। गार्डनर का विश्वास है कि किसी व्यक्ति की कला समीक्षा की क्षमता या स्तर को विकसित करके भौतिक सामाजिक जीवन की सामान्य समझ को बढ़ाया जा सकता है और कला की समझ को परिष्कृत करने के लिए समाज को कलाशिक्षा और बाल कला शिक्षा पर महत्व दिया जाना चाहिए।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

- Funch, Sode Bjarne. (1997). The Psychology of Art Appreciation. University of Copenhagen, Museum Tusculanum Press.
- Gardner, Howard. (1982). Children's Perceptions of Work of Art: A Developmental Portrait. Brighton, Harvester Press.
- Gardner, Howard. (2011). Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligence. New York, Basic Books.
- [Get details about the painting 'Les Demoiselles d' Avignon by Pablo Picasso](#)
- [Get details about the Husain's painting 'Mother Teresa'](#)
- Husain, M.F. (2002). M.F. Husain ki Kahani Apni Jubani (M.F. Husain's Autobiography). M.F. Husain Foundation, Mumbai.
- Sharma, Chand Lokesh. (2008). Bharat ki Chitrakala ka Sanchipt Itihas. Meerut, Goel Publishing House.